मिशन कार्य की कड़वी मिठास (12:25-13:14)

अध्याय 11 के अन्त में हमने देखा कि अन्ताकिया के भाइयों ने ''ठहराया, कि हर एक अपनी-अपनी पूंजी के अनुसार यहूदिया में रहने वाले भाइयों की सेवा के लिए कुछ भेजे। और उन्होंने ऐसा ही किया; और बरनबास और शाऊल के हाथ प्राचीनों के पास कुछ भेज दिया'' (11:29, 30)। यदि लूका का वृत्तांत कालक्रमानुसार है, तो बरनबास और शाऊल यहूदिया में उस समय पहुंचे जब ''हेरोदेस राजा ने कलीसिया के कई एक व्यक्तियों को दुख देने के लिए उन पर हाथ डाले'' (12:1)। वे उस समय उसी क्षेत्र में थे जब याकूब की हत्या हुई और पतरस को जेल में डाला गया था। बरनबास और शाऊल भी उस प्रार्थना सभा[1] में उपस्थित होंगे जहां पतरस ने चमत्कारी ढंग से अपने छूटने के बारे में बताने के लिए उन्हें बीच में रोका था!

प्रेरितों 12:25 वहां से आगे बढ़ता है जहां प्रेरितों 11:30 समाप्त हुआ था: ''जब बरनबास और शाऊल अपनी सेवा पूरी कर चुके... तो यरूशलेम से लौटे[2]'' (12:25क)।[3] हमें यह नहीं बताया गया कि वितरण कैसे हुआ या यहूदिया के लोगों की क्या प्रतिक्रिया थी, परन्तु हमें आशा है कि उनमें से बहुतेरों ने उस सहायता को उसी प्रेम से स्वीकार किया जिससे यह दी गई थी।[4] बरनबास और शाऊल अन्ताकिया में आए, तो ''यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है, साथ लेकर'' गए (12:25ख)। अध्याय 12 में हमें यूहन्ना मरकुस का एक हवाला मिला था;[5] रिश्ते में वह बरनबास का भाई लगता था।[6] शान्ति अथवा प्रोत्साहन के पुत्र ने सम्भवत: इस जवान को प्रभु का सेवक बनाने की उम्मीद की थी। अन्त में अन्ताकिया में पहुंचकर उनके पास बताने के लिए क्या था! नियत कार्य के बजाय, उनका मिशन एक साहसिक कार्य में बदल चुका था!

बरनबास और शाऊल की वापसी अध्याय 13 के आरम्भ के लिए मंच तैयार करती है:

> अन्ताकिया की कलीसिया में कितने भविष्यवक्ता और उपदेशक थे; अर्थात बरनबास और शमौन जो नीगर कहलाता है; और लूकियुस कुरेनी, और देश की चौथाई के राजा हेरोदेस का दूधभाई मनाहेम और शाऊल। जब वे उपवास सहित प्रभु की उपासना कर रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा; मेरे निमित्त बरनबास और

शाऊल को उस काम के लिए अलग करो जिस के लिए मैं ने उन्हें बुलाया है। तब उन्होंने उपवास और प्रार्थना करके और उन पर हाथ रखकर उन्हें विदा किया (13:1-3)।

प्रेरितों 13 एक महत्वपूर्ण अध्याय है। प्रेरितों 13:1-3 प्रेरितों के काम की पुस्तक का जलविभाजक है। इस पद से पूर्व, मुख्य व्यक्ति पतरस है, मुख्य नगर यरूशलेम है, और सुसमाचार के मुख्य प्राप्तकर्ता यहूदी हैं। प्रेरितों 13:1-3 के बाद, मुख्य व्यक्ति पौलुस है, मुख्य नगर अन्ताकिया है, और सुसमाचार के मुख्य प्राप्तकर्ता अन्यजाति हैं।

अध्याय 13 का एक और महत्व यह है कि इस अध्याय में हम सुसमाचार के प्रचार की यीशु की योजना के तीसरे चरण में पहुंचते हैं। प्रेरितों 1:8 में यीशु ने कहा था, ''... तुम ... यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, *और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे*।'' पहला पड़ाव यरूशलेम था (हमने अध्याय 2 में यरूशलेम में सुसमाचार के प्रचार का आरम्भ होते देखा)। दूसरा पड़ाव यहूदिया और सामरिया था (अध्याय 8 में हमने मसीहियों के तितर-बितर होने और फिलिप्पुस के सामरिया में जाने को देखा)। अन्त में, कलीसिया की स्थापना के पन्द्रह या अधिक वर्षों के बाद,[7] हम ''पृथ्वी की छोर तक'' सुसमाचार ले जाने को देखेंगे। अध्याय 13 के अन्त में, पौलुस अविश्वासी यहूदियों को बताएगा कि, ''प्रभु ने हमें यह आज्ञा दी है, ... ताकि तू *पृथ्वी की छोर तक* उद्धार का द्वार हो'' (13:47)।

आगे, अध्याय 13 में पौलुस की मिशनरी यात्राएं आरम्भ हो जाती हैं। (हम में से बहुत से लोग जब प्रेरितों के काम की पुस्तक के बारे में विचार करते हैं, तो तुरन्त पौलुस की यात्राओं के बारे में सोचने लगते हैं।) मुझे आशा है कि इन मिशनरी यात्राओं का अध्ययन करने पर, हम खोए हुए और मर रहे संसार में सुसमाचार को ले जाने को उत्सुक होंगे।

इस पाठ में, हम प्रेरितों 13:1-14 में देखेंगे, जहां पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा के आरम्भ के बारे में बताया गया है। क्योंकि अगले आठ या नौ अध्यायों में हम पौलुस के मिशनरी प्रयासों का अध्ययन कर रहे होंगे, इसलिए मिशन कार्य की कुछ कड़वी मिठास के साथ आरम्भ करना अच्छा रहेगा।[8]

मिशन कार्यः मीठा (13:1-3)

एक महान परिवार (आयत 1)

आयत 1, ''अन्ताकिया की कलीसिया में...'' के साथ आरम्भ होती है। पिछले एक पाठ में हमने एक विशेष मण्डली पर ध्यान दिया था जो अन्ताकिया में थी। यह मण्डली सबसे पहले अपनी इच्छा से अन्यजातियों में गई, जिसमें सबसे पहले यहूदी और अन्यजाति सदस्य थे, और सबसे पहले दूसरी मण्डली की सहायता के लिए परोपकारी कार्य किया। अब अन्ताकिया की यह कलीसिया आत्माओं के लिए विश्वव्यापी दर्शन के साथ पहली मण्डली होनी थी। जब आप प्रभु का कार्य करते हैं, तो आपकी संगति वैसी ही मण्डलियों

के साथ होती है जिनका दर्शन अन्ताकिया की मण्डली जैसा होता है।

महान दोस्त (आयत 1)

जब आप प्रभु का कार्य करते हैं, तो आपको दाख की बारी में बहुत अच्छे कर्मचारियों के साथ काम करने का अवसर मिलता है। आयत 1 में कुछ का नाम दिया गया है जिन्होंने अन्ताकिया में परिश्रम किया: ''अन्ताकिया की कलीसिया में कितने भविष्यवक्ता और उपदेशक थे; अर्थात बरनबास और शमौन जो नीगर कहलाता है; और लूकियुस करेनी, और देश की चौथाई के राजा हेरोदेस का दूधभाई मनाहेम और शाऊल।'' पांच आदमियों का नाम ''भविष्यवक्ता और उपदेशक'' के रूप में दिया गया है (दोनों पद सम्भवत: आत्मा की प्रेरणा से बोलने वालों के लिए हैं[9])। पहला नाम प्रोत्साहन के पुत्र बरनबास का है। दूसरा ''शमौन[10] जो नीगर कहलाता है'' का है। शमौन उसका यहूदी नाम था, नीगर उसका रोमी नाम (''नीगर'' ''काला'' के लिए लातीनी शब्द है और सम्भवत: शमौन के काले रंग के कारण उसे नीगर कहा गया[11])। अगला लूकियुस कुरेनी है। वह सम्भवत: उन (कुरेनी पुरुषों) में से एक था जिन्होंने अन्ताकिया में कलीसिया की स्थापना की (11:20)।[12] फिर, ''राजा हेरोदेस का दूधभाई मनाहेम''[13] आता है। उसके सम्बन्ध राज परिवार के साथ थे। (इसे विस्तारपूर्वक जानना ठीक रहेगा!) अन्त में शाऊल का नाम, शायद अन्ताकिया की कलीसिया में उसके महत्व को बताता है। वह इस मण्डली के साथ एक वर्ष से थोड़े अधिक समय से था (11:26) और सम्भवत: उसे बरनबास का आश्रित माना जाता था।

सूची में पुन: देखिए: संसार के विभिन्न भागों के पांच पुरुष थे; वे समाज के विभिन्न भागों से थे; यहां तक कि उनकी चमड़ी के रंग भी अलग-अलग थे। यदि उनका कुछ साझा था तो वह था यीशु तथा लोगों के प्रति उनका प्रेम, और दोनों को मिलाने की उनकी इच्छा थी। मुझे सिडनी, ऑस्ट्रेलिया में अपनी टीम के सदस्यों में और अन्य टीमों की जिन्हें मैं जानता हूं, विभिन्नता और उनमें से हर एक का प्रभु के प्रति प्रेम स्मरण आता है। जब आप मिशन कार्य में लग जाते हैं, तो आपका मेल इस प्रकार के लोगों से हो ही जाता है!

महान संगति (आयत 2)

अन्ताकिया की कलीसिया में मुख्य कर्मियों का नाम देने के बाद, आयत 2 आरम्भ होती है, ''जब वे[14] उपवास सहित प्रभु की उपासना कर रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा...।'' पवित्र आत्मा ने उनमें से ऐसे मिशनरियों को नहीं चाहा जो ''कुछ करने की प्रतीक्षा कर रहे थे''; उसने अपना चयन उन में से किया जो प्रभु की सेवा में *सक्रिय* थे! यदि कलीसिया में आपको उचित स्थान नहीं मिला, तो हो सकता है कि ऐसा इसलिए हो कि आप उस कार्य को नहीं कर रहे हैं, जो आप कर सकते हैं। ''परमेश्वर व्यस्त लोगों को ही बुलाता है।''

यह पहली बार है कि प्रेरितों के काम में उपवास (कुछ समय के लिए इच्छापूर्वक भोजन को छोड़ने) का उल्लेख आया है। पुराने नियम में, उपवास से मुख्यत: *प्रायश्चित*

व्यक्त किया जाता था; नये नियम में, उपवास मुख्यत: *प्राथमिकताओं* का संकेत देता है। आरम्भिक मसीहियों के लिए भोजन ही सब कुछ नहीं था। कभी-कभी परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए, वे भोजन के समय तक को भूल जाते थे।[15]

जब आप मिशन कार्य में लगे होते हैं, तो आप उस संगति का भाग होते हैं जिसकी स्पष्ट प्राथमिकताएं हैं, और आप परमेश्वर तथा मनुष्य की सेवा के लिए समर्पित लोगों के साथ जुड़े होते हैं। इससे अच्छी संगति और कोई नहीं है!

एक महान अहसास (आयत 2, 3)

जब वे उपवास रखकर उपासना कर रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा, ''मेरे निमित्त बरनबास और शाऊल को उस काम के लिए अलग करो जिस के लिए मैंने उन्हें बुलाया है'' (आयत 2ख)। पवित्र आत्मा के बात करते समय सम्भवत: कलीसिया एक स्थान पर ही थी; शायद वे शेष संसार को यीशु का संदेश बताने के लिए एक प्रार्थना सभा कर रहे थे। एक बार फिर, सुसमाचार को सारे संसार में ले जाने की अपनी योजना के अगले चरण को आरम्भ करने के लिए परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया। आत्मा की प्रेरणा पाए वक्ता मण्डली का भाग थे (आयत 1), इसलिए आत्मा ने संभवत: उन में से एक के द्वारा बात की।

पवित्र आत्मा ने स्पष्ट किया कि *दो* पुरुषों को भेजा जाए। यीशु ने ''लिमिटेड कमीशन'' अर्थात सीमित आज्ञा देकर लोगों को भेजा, तो उसने उन्हें दो-दो करके भेजा था (मरकुस 6:7)। मिशन कार्य को करने के लिए यह एक अच्छा ढंग है।[16] ''एक से दो अच्छे हैं ... क्योंकि यदि उन में से एक गिरे, तो दूसरा उसको उठाएगा'' (सभोपदेशक 4:9, 10)। वे दो पुरुष बरनबास और पौलुस थे, जिनका नाम आयत 1 में दी गई सूची में पहले और अन्त में आया है। बरनबास के चयन पर किसी ने भी आश्चर्य नहीं किया होगा; शाऊल के चयन पर कुछ लोगों की भौहें चढ़ी होंगी।[17] ध्यान दें कि पहली मिशनरी यात्रा पर भेजने के लिए पवित्र आत्मा ने अन्ताकिया में सबसे उत्तम पुरुषों को चुना। आज कई लोगों को लगता है कि उत्तम पुरुषों को घर पर रहकर प्रचार करना चाहिए जबकि उनके बाद आने वाले दूसरे लोगों को प्रचार के लिए भेजना चाहिए, परन्तु पवित्र आत्मा ने इस प्रकार नहीं किया।

पवित्र आत्मा का संदेश था, ''मेरे निमित्त बरनबास और शाऊल को उस काम के लिए अलग करो जिसके लिए मैंने उन्हें बुलाया है'' (आयत 2ख)। क्रिया रूप यह संकेत देता है कि इन पुरुषों को अभी नहीं बुलाया गया था। शाऊल को बारह वर्ष पूर्व, सभी लोगों तक सुसमाचार ले जाने के कार्य के लिए बुलाया गया था, जब वह दमिश्क के मार्ग में था (देखिए 26:12-18)। बरनबास को सम्भवत: प्रभु ने कुछ समय पूर्व बुलाया था। अब अन्ताकिया की कलीसिया के लिए अपनी विशेष सेवकाई के लिए उन्हें ''अलग करने'' का यह सुअवसर था।

पवित्र आत्मा की आज्ञा मानकर, अन्ताकिया की कलीसिया ने एक विशेष प्रार्थना सभा रखी थी। उस उपासना में, ''उन्होंने उपवास और प्रार्थना करके उन पर हाथ रखे''[18] (आयत 3क)। यह विशेष प्रार्थना सभा बरनबास और शाऊल को चमत्कारी दान देने के

लिए नहीं थी; वे तो पहले ही आत्मा की प्रेरणा से बोलने वाले वक्ता थे (आयत 1)। अन्ताकिया की कलीसिया आत्मा के किसी आत्मिक दान को *प्रदान* नहीं कर रही थी, बल्कि आत्मा के कार्य की *पुष्टि* कर रही थी। न्यू इंटरनेशनल कमेंट्री ऑन न्यू टैस्टामेंट में एफ़. एफ़. ब्रूस के अनुसार:

> इस अवसर पर हाथ रखने से बरनबास और पौलुस को कोई ऐसा आत्मिक दान अथवा अधिकार नहीं दिया गया जो उसके पास पहले से न हो; परन्तु ऐसा करके अन्ताकिया की कलीसिया ने... उनके साथ अपनी संगति व्यक्त की और उन्हें अपने प्रतिनिधियों अथवा ''प्रेरितों'' के रूप में मान्यता दी। उन्हें समस्त कलीसिया की ओर से भेजा गया था और अन्ताकिया से लौटने पर उन्होंने सारी कलीसिया को ही अपनी रिपोर्ट दी थी (14:26, 27)।

इस प्रार्थना सभा से इन दो पुरुषों और मण्डली, दोनों को ही लाभ मिला। प्रार्थना सभा ने बरनबास और शाऊल के मनों पर उनके कार्य की गंभीरता का प्रभाव डाला।[19] प्रार्थना सभा ने सदस्यों के मनों पर इन पुरुषों के साथ सम्बन्ध का प्रभाव डाला कि ये *उनके* ''प्रेरित'' थे जिन्हें *वे* बाहर भेज रहे थे। (शब्द ''प्रेरित'' का अर्थ है ''भेजा हुआ,'' प्रभु द्वारा या मण्डली द्वारा।[20] 14:14 में पौलुस और बरनबास को ''प्रेरितों'' कहा गया है।) ''उपवास'' शब्द में निहित है कि यह एक गम्भीर बात थी, न कि जल्दबाज़ी की; उन्होंने काम को सही ढंग से करने के लिए समय लगाया (भूख की पीड़ा को नज़रअन्दाज़ करके)। आज, जब हम किसी व्यक्ति को मिशन क्षेत्र में भेजते हैं, तो हमें भी उसकी विदाई के लिए एक विशेष प्रार्थना सभा रखनी चाहिए जिससे उसके और अपने मनों में उस कार्य की गम्भीरता दिखाई जा सके।[21]

आराधना के बाद, तो अन्ताकिया के भाइयों ने ''उन्हें विदा किया'' (आयत 3ख)। एक पल के लिए, कल्पना करें कि आप बरनबास या शाऊल हैं जो नगर से बाहर मार्ग में हैं, भाइयों की प्रार्थनाएं और शुभकामनाएं आपके कानों में गूंज रही हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि इन दोनों पुरुषों की भावनाएं मिली जुली थीं; वे अपने सामने आने वाली अज्ञात बात के लिए उत्तेजना और बेचैनी को जानते थे। तथापि, वे जानते थे कि वे बिल्कुल वहां हैं जहां परमेश्वर चाहता था कि वे हों, बिल्कुल उसी कार्य को करते हुए जो परमेश्वर चाहता था कि वे करें। मिशनरियों को इस बात से बड़ा अच्छा लगता है कि वे अपने जीवनों के लिए परमेश्वर की योजना को पूरा कर रहे हैं।

पवित्र आत्मा अब हम से सीधे बात नहीं करता जैसे उसने अन्ताकिया में मसीहियों से की थी, परन्तु मेरा विश्वास है कि आज भी हर मसीही के जीवन के लिए परमेश्वर की योजना है।[22] आपके जीवन के लिए योजना को जानना हर बार आसान नहीं होगा, परन्तु इसका प्रयास करना लाभदायक है। आपके लिए उसकी इच्छा को खोजने का एक ढंग यह देखना है कि उसने आपको क्या गुण दिए हैं और यह समझना कि आपको अपनी व्यक्तिगत शक्ति बढ़ाने के लिए नहीं, बल्कि परमेश्वर के नाम को महिमा देने के लिए ये

गुण दिए गए हैं। उसकी इच्छा को जानने का एक और ढंग अवसर के द्वार के खुलने को देखना है। लिखने के प्रति मेरे प्रेम से *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* में लिखने के लिए ऍंडी क्लोर का समय पर निमन्त्रण मुझे यह कायल करने का बड़ा कारण था कि जीवन के अन्तिम बड़े प्रयासों में से एक के रूप में यह मेरे लिए परमेश्वर की इच्छा थी।

आशा करता हूं कि आपका विश्वास है कि आपको परमेश्वर की सेवा के लिए कुछ विशेष कार्य करने के लिए अलग किया गया है। यह आवश्यक नहीं है कि कार्य बड़ा या प्रभावशाली ही हो। हो सकता है कि यह परमेश्वर का ठण्डे पानी का कटोरा बनने की तरह ही आसान हो (मरकुस 9:41) परन्तु *आपकी* नज़र में यह विशेष कार्य होना चाहिए। अपने विशेष कार्य को ढूंढ़ना एक महान अनुभूति है!

यदि हमें प्रभु के लिए कार्य पर सामान्य ढंग से विचार करना हो, तो हम इसकी अतिरिक्त मिठास अर्थात ''उज्ज्वल भविष्य'' पर ध्यान दे सकते हैं (मत्ती 28:18-20; दानिय्येल 12:3), परन्तु हमें अपने पाठ को जारी रखना है। ऐसा करते हुए, हम देखते हैं कि मिशन कार्य का एक कड़वा पक्ष भी हो सकता है।

मिशन कार्यः कड़वा (13:4-14)

बरनबास और शाऊल ने यूहन्ना मरकुस को अपने ''सेवक'' (आयत 5) के रूप में अपने साथ ले लिया।[23] ''सो वे पवित्र आत्मा के भेजे हुए[24] सिलूकिया [अन्ताकिया के लिए बन्दरगाह][25] को [पन्द्रह-सोलह मील पश्चिम की ओर] गए; और वहां से जहाज पर चढ़कर कुप्रुस को चले'' (आयत 4)।[26] कुप्रुस एक विशाल टापू था,[27] जो तांबे की खानों और जहाज़ निर्माण उद्योग के लिए प्रसिद्ध था। शायद कुप्रुस उनका पहला ठिकाना था क्योंकि बरनबास (उनकी टीम का लीडर) वहीं का था (4:36) और वह अपने मित्रों तथा परिवार में सुसमाचार को बांटना चाहता था।[28] उस समय टापू के लिए सत्तर मील की यात्रा विशेषकर महत्वपूर्ण नहीं थी, किन्तु थी यह अत्यधिक महत्वपूर्ण। आखिर एक मण्डली ''सुसमाचार'' में ''जाना'' शब्द मिला रही थी![29]

जब तीन व्यक्ति कुप्रुस में पहुंचे, तो सम्भवतः थोड़े समय के लिए अच्छा लगा। वे मित्रों की संगति में थे; प्रभु का कार्य कर रहे थे और एक खूबसूरत जगह में थे। टापू को कई बार मकरिया कहा जाता था, जिसका अर्थ है ''धन्य टापू।'' मिशन कार्य करने के लिए कुप्रुस में जाने की तुलना प्रचार के लिए हवाई में जाने से की गई है।[30] तथापि, थोड़े समय बाद ही इस दल को मिशन कार्य के प्रयासों का पहला कड़वा स्वाद चखना पड़ा था।

निराशा एवं हताशा (आयत 5, 6)

ये लोग सलमीस में उतरे, जो कि कुप्रुस के पूर्वी किनारे पर महानगरीय पत्तन तथा टापू का व्यापारिक केन्द्र था। ''और सलमीस में पहुंचकर, परमेश्वर का वचन यहूदियों के आराधनालयों में सुनाया; और यूहन्ना उनका सेवक था'' (आयत 5)। कुप्रुस में यहूदियों की काफ़ी जनसंख्या थी, सो हमें वहां बहुत से आराधनालयों के बारे में पढ़ने को मिलता

है। आराधनालयों में पहले वचन सुनाना मिशनरी यात्राओं में अपनाया जाने वाला एक ढंग होगा। इसने यहूदियों को पहले सुसमाचार सुनने का अवसर दिया (रोमियों 1:16) और परमेश्वर का भय मानने वाले अन्यजातियों के लोगों से सम्पर्क करने का काम भी किया।

सलमीस में काम करने के बाद, बरनबास और शाऊल नब्बे या अधिक मील तक ''उस सारे टापू में होते हुए,'' गए (आयत 6), जाते-जाते निश्चय ही वे नगरों में प्रचार करते और शिक्षा देते रहे। इन आरम्भिक प्रयासों के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण तथ्य वह नहीं जो लूका ने उनके बारे में बताया, बल्कि वह है जो उसने नहीं कहा। प्रेरितों के काम में सुसमाचार के प्रचार से उनके वचन की बात मानने का कोई उल्लेख नहीं है। मुझे सिडनी, ऑस्ट्रेलिया में वे आरम्भिक दिन याद आते हैं। कुप्रुस को ''धन्य टापू'' के रूप में जाना जाता था; ऑस्ट्रेलिया को ''शुभ देश'' कहा जाता है। दोनों टापुओं को प्राकृतिक स्रोतों तथा मनोहर दृश्यों की आशीष मिली थी परन्तु संसार में सुसमाचार को सबसे अधिक ग्रहण करने वाला स्थान बनने के लिए इनमें से कोई भी योग्य नहीं होगा। ऑस्ट्रेलिया का एक निवासी मुझसे कहने लगा कि, ''हमारे पास सूर्य है, लहरें हैं, और सामाजिक सुरक्षा है। हमें परमेश्वर की क्या आवश्यकता है?'' निष्कपट, मन ढूंढ़ने में हमें समय लगा। खोज करने वाले महीनों में हम अपने प्रयासों के धीमे फल में दिन, हफ्ते और महीने अपने मिशन और परमेश्वर में विश्वास के कारण ही लगे रहे, मिशन कार्य करते हुए निराश और हताश होना बड़ा आसान है।

अपमान एवं विश्वासघात (आयत 6-12)

अन्त में बरनबास, शाऊल और यूहन्ना मरकुस टापू के पश्चिमी सिरे पर पाफुस नगर की बन्दरगाह पर पहुंचे। पाफुस कुप्रुस की राजधानी और हाकिम का निवास था:

> और उस सारे टापू में होते हुए, पाफुस तक पहुंचे: वहां उन्हें बार-यीशु नाम एक यहूदी टोन्हा[31] और झूठा भविष्यवक्ता[32] मिला। वह सिरगियुस पौलुस सूबे[33] के साथ था, जो बुद्धिमान पुरुष था (आयतें 6, 7क)।

लूका ने यह नहीं कहा कि ''उन्हें सूबा मिला, जिसका बार-यीशु नाम का एक सलाहकार था,'' बल्कि यह लिखा कि ''उन्हें बार-यीशु नामक एक यहूदी टोन्हा और झूठा भविष्यवक्ता मिला।'' प्रकाश-बिन्दु रोम के एक कार्यकर्त्ता के मनपरिवर्तन पर नहीं, बल्कि शैतान के एक कार्यकर्त्ता का सामना करने पर है।

हम चकित हो सकते हैं कि सिरगियुस पौलुस जैसे एक बुद्धिमान व्यक्ति के पास सलाहकार के रूप में एक जादूगर था, परन्तु तब अन्धविश्वास बहुत था। अधिकारी लोगों के लिए जादू करने वाले लोगों को अपने निजी ज्योतिषी के रूप में रखना सामान्य बात थी। तथापि, सिरगियुस पौलुस की साख थी कि उसका मन खुला था। जब उसने बरनबास और शाऊल का प्रचार सुना, तो उसने उन्हें बुलाया और ''परमेश्वर का वचन

सुनना चाहा'' (आयत 7ख)।

बार-यीशु जानता था कि यदि सिरगियुस पौलुस ने प्रभु यीशु का संदेश ग्रहण कर लिया तो उसका प्रभाव ख़तरे में पड़ जाएगा। इसलिए, जब बरनबास और शाऊल ने बोलने का यत्न किया, तो उसने उन्हें रोका, उनका और उनके संदेश का अपमान किया। ''परन्तु इलीमास टोन्हे ने, क्योंकि यही उसके नाम का अर्थ है,[34] उनका साम्हना करके,[35] सूबे को विश्वास करने से रोकना चाहा'' (आयत 8)। शैतान जब निराश तथा हताश करके बरनबास और शाऊल को रोक न सका, तो उसने अपमान तथा धोखे से उन्हें रोकने का यत्न किया।

ज्योति के प्रभु को अंधकार के राजकुमार द्वारा चुनौती दी गई थी और शाऊल उस चुनौती का जवाब दिए बिना नहीं रह सका:

> तब शाऊल ने जिस का नाम पौलुस भी है, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो[36] उस की ओर टकटकी लगाकर कहा। हे सारे कपट और सब चतुराई[37] से भरे हुए शैतान की सन्तान, सकल धर्म के बैरी, क्या तू प्रभु के सीधे मार्गों को टेढ़ा करना न छोड़ेगा? (आयतें 9, 10)।

शाऊल के शब्द नये नियम में मिलने वाले ज़बरदस्त शब्दों में से हैं।[38] ''बार-यीशु'' का अक्षरश: अर्थ ''यीशु [यहोशू] का पुत्र'' है।[39] वस्तुत:, शाऊल ने कहा, ''तुम सोचते होगे कि तुम यहोशू के पुत्र हो, परन्तु वास्तव में तुम शैतान के पुत्र हो!'' (देखिए यूहन्ना 8:44.)

शाऊल ने उसको श्राप दिया: ''अब देख, प्रभु का हाथ तुझ पर लगा है; और तू कुछ समय तक अन्धा रहेगा और सूर्य को न देखेगा'' (आयत 11क)। आयत 11ख में हम पढ़ते हैं कि ''तब तुरन्त धुन्धलाई[40] और अन्धेरा उस पर छा गया, और वह इधर-उधर टटोलने लगा, ताकि कोई उसका हाथ पकड़कर ले चले।'' एक प्रेरित द्वारा किसी मानवीय जीव की शारीरिक क्षति के लिए किया गया एकमात्र चमत्कार यही है।[41] तथापि, यह समझ आ जाना चाहिए, कि शाऊल केवल परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में कार्य कर रहा था; उसने जादूगर को बताया कि ''*प्रभु का* हाथ तुझ पर लगा है।'' यहां परमेश्वर ने इतना भयंकर दण्ड क्यों दिया था? सर विलियम रामसे ने कहा था, ''बार-यीशु ने रोमी जगत में पाये जाने वाले मानवीय इच्छा पर ज़बरदस्त प्रभाव का प्रतिनिधित्व किया, ऐसा प्रभाव जो सम्राट पर विजय पाने का यत्न करके मसीहियत को नाश कर सकता था या इसके द्वारा नाश हो सकता था।'' भलाई तथा बुराई की शक्तियों के मध्य युद्ध की रेखाएं खींची जा चुकी थीं।[42]

इन शब्दों पर ध्यान दें ''तू *कुछ समय तक* अन्धा रहेगा और सूर्य को न देखेगा'' (आयत 11क)। बार-यीशु ने पूरी उम्र अन्धा नहीं रहना था अर्थात उसने फिर से देखना था। उस समय शाऊल की तरह जो दमिश्क के मार्ग पर अन्धा हो गया था, उसे सोचने और पश्चात्ताप के लिए समय मिल गया होगा।[43]

यद्यपि आश्चर्यकर्म तो असाधारण था, किन्तु उसका प्रभाव नहीं: ''तब सूबे ने जो हुआ था, देखकर और प्रभु के उपदेश से चकित होकर विश्वास किया'' (आयत 12)। अधिकारी का आश्चर्य वह आश्यर्चकर्म नहीं बल्कि ''प्रभु का उपदेश'' था। सुसमाचार उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ था और है (रोमियों 1:16)। क्या सूबा मसीही बन गया? शायद; प्रेरितों के काम की पुस्तक में ''विश्वास किया'' शब्द आम तौर पर मनपरिवर्तन की सम्पूर्ण प्रक्रिया के लिए इस्तेमाल होता है, जिसमें बपतिस्मा भी शामिल है।[44] तथापि, लूका की दिलचस्पी, उस अवसर से महत्वपूर्ण सबक सीखने की थी ताकि बुराई की शक्तियों का सामना करके उन्हें पराजित किया जा सके!

मिशनरी कार्य को शैतान के विरोध का सामना हमेशा करना पड़ेगा। शैतान सच्चाई पर टिक नहीं सकता। हाल ही में, किसी पूर्वी यूरोपीय देश में बाइबलें बांटी जा रही थीं, स्थानीय धार्मिक अधिकारियों ने यह अफवाह फैला दी कि वे पुस्तकें किसी सम्प्रदाय विशेष की बाइबलें हैं, वास्तविक बाइबलें नहीं, और उन्हें फेंक दिया जाए। यदि आप वचन को फैलाने की कोशिश करते हैं तो कपटपूर्ण ढंग से आपके नाम को बदनाम किए जाने पर हैरान न हों।

परित्याग एवं निराशा (आयत 13)

लूका ने जादूगर के अपने वृत्तांत में एक रोचक वाक्यांश जोड़ दिया: ''तब शाऊल ने *जिसका नाम पौलुस भी है, ...*'' (आयत 9)। उस समय के अधिकांश लोगों की तरह, शाऊल के एक से अधिक नाम थे। उसके इब्रानी नाम शाऊल, के अतिरिक्त, उसका एक रोमी नाम भी था, पौलुस।[45] यहां तक अपने व्याख्यान में लूका ने उसके इब्रानी नाम का प्रयोग किया था; यहां से आगे लूका ने उसके रोमी नाम का प्रयोग किया।[46] पदनाम में यह बदलाव महत्वपूर्ण है (पौलुस ने अपनी सारी पत्रियों में अपनी पहचान के लिए अपना रोमी नाम इस्तेमाल किया)। कइयों को रोमी सूबे और प्रेरित के नाम में कुछ सम्बन्ध दिखाई देता है, परन्तु यह संयोग भी हो सकता है और नहीं भी। इस बात की अधिक सम्भावना है कि लूका पौलुस के इब्रानी नाम से उसके अन्यजाति नाम की ओर यह संकेत देने के लिए ले गया कि अन्यजातियों के लिए इस प्रेरित का विशेष मिशन सचमुच आरम्भ हो गया था। अब पीछे मुड़ने वाली कोई बात नहीं थी!

जब मिशन टीम ने पाफुस में अपना काम पूरा किया, तो एक और महत्वपूर्ण बदलाव हुआ। आयत 13 आरम्भ होती है, '' *पौलुस और उसके साथी* पाफुस से जहाज खोलकर पंफूलिया के पिरगा में आए।'' यहां तक, बरनबास को टीम में पहला स्थान प्राप्त था; इसके बाद, प्रायः पर पहले पौलुस का नाम ही आता है।[47] पौलुस उनके उस छोटे से दल का एक स्वीकृत अगुआ बन चुका था।[48]

पाफुस से चलकर तीन पुरुष लगभग 150 मील उत्तर एशिया माइनर के तट पर पहुंचने तक चलते रहे थे। वे सम्भवतः अत्तलिया की बन्दरगाह पर उतरे (14:25) और फिर पंफूलिया की राजधानी, पिरगा से सात मील सिस्त्रुस नदी की ओर चले गए। पिरगा पहुंचने पर, उनकी टीम को एक बहुत बड़ा धक्का लगा जब उस दल के तीसरे आदमी ने

उन्हें छोड़ दिया। ''यूहन्ना उन्हें छोड़कर यरूशलेम को लौट गया'' (13:13ख)।

हमें नहीं मालूम कि यूहन्ना मरकुस ने उन्हें क्यों छोड़ा। हो सकता है कि उसे घर की याद सताती हो।[49] यह भी हो सकता है कि उसको लगा हो कि मिशन कार्य में कोई ऊपरी तड़क-भड़क नहीं है, बल्कि यह एक कठिन कार्य है। यह भी हो सकता है कि वह भीतरी इलाके के संकटपूर्ण मार्ग से परिचित था। हो सकता है कि वह यह बात सहन नहीं कर पाया कि अब उनका अगुआ, उसका भाई बरनबास नहीं, बल्कि पौलुस था। यूहन्ना मरकुस के जाने का कारण कोई भी हो, पौलुस उसके इस निर्णय से बहुत दु:खी हुआ (15:38, 39)। लूका ने कहा कि यूहन्ना *लौट गया* (13:13); पौलुस ने कहा कि वह *अलग हो गया* (15:38)। वर्षों से मैंने मिशन कार्य करने वाले बहुत से लोगों को हिम्मत हारकर और मोह भंग करके वापस घरों को लौटते देखा है, जिनके कारण मिशन क्षेत्र में कार्य करने वालों का उत्साह भंग हुआ और वे निराश हुए।[50] मिशन कार्य करने का यह कड़वा पक्ष है। हम में से हर एक को महसूस करना चाहिए कि जिसने हमें *कभी न* छोड़ने का वायदा किया है, वह परमेश्वर है (इब्रानियों 13:5)।

ख़तरा एवं बीमारी (आयत 14)

बेशक पौलुस और बरनबास दुखी थे परन्तु वे छोड़कर नहीं गए। उन्होंने गलतिया के रोमी क्षेत्र के मुख्य नगर, पिसिदिया के अन्ताकिया के भीतरी क्षेत्रों में जाने का फैसला किया।[51] वहां पहुंचने के लिए उन्हें संसार के कुछ अति जोखिम भरे क्षेत्रों से होकर गुज़रना था।[52] अन्ताकिया सौ से अधिक मील उत्तर और 3500 फुट से अधिक की उंचाई पर था। पौलुस और बरनबास को जंगली जानवरों और खूनी लुटेरों से भरे चीड़ के जंगलों में से होकर ख़तरनाक पहाड़ी मार्गों पर जाना था।[53] सिकन्दर महान ने संसार पर विजय पाने के लिए सभी जगहों पर जाने के बारे में लिखा, ''उनमें से पंफूलिया के देश और लोगों जैसा दुर्दम्य देश कोई नहीं था।''[54]

तथापि, यह सम्भव है, कि पौलुस की कठिनाइयों में यात्रा के ख़तरे बहुत कम थे। बाद में, पौलुस ने पिसिदिया के अन्ताकिया में कलीसिया को (और अन्य मण्डलियों को जो उसने उस क्षेत्र में स्थापित की थीं) एक पत्र लिखा।[55] उस पत्र में, उसने कहा, ''पर तुम जानते हो, कि पहिले पहिल मैंने *शरीर की निर्बलता के कारण* तुम्हें सुसमाचार सुनाया'' (गलतियों 4:13)। पौलुस के शब्द संकेत देते हैं कि वह पिरगा में क्यों नहीं ठहरा[56] और वह अपनी शारीरिक बीमारी के कारण अन्ताकिया को चला गया। क्योंकि पंफूलिया दलदल भरा कीचड़ युक्त निचला तटीय क्षेत्र था, जिस कारण वहां बहुत मच्छर थे।[57]

बहुत से लोगों का मानना है कि पौलुस को वहां मलेरिया हो गया होगा और उसने जल्दी से अन्ताकिया के ठण्डे पहाड़ी पठार में जाने का निर्णय लिया होगा। ऐसा हुआ था या नहीं, परन्तु स्पष्टत: अन्ताकिया के पूरे मार्ग में नहीं तो अधिकतर भाग में बीमार था। ''आश्चर्य यह नहीं कि मरकुस वापस चला गया; आश्चर्य यह है कि पौलुस आगे निकल गया।''

पौलुस और बरनबास रुके नहीं। ''और पिरगा से आगे बढ़कर वे पिसिदिया के अन्ताकिया में पहुंचे'' (13:14क)। विलियम बार्कले ने टिप्पणी की, ''प्रेरितों के काम की अद्‌भुत बातों में एक असाधारण शौर्य है जिसकी एक वाक्य में उपेक्षा हो जाती है।''

ख़तरा एवं बीमारी बड़ी हो या छोटी, अधिकतर मिशनरियों के लिए पैकेज का एक भाग होती है, विशेषकर उनके लिए जो असहनशील और/अथवा अविकसित क्षेत्रों में काम करते हैं। पौलुस की तरह कठिन परिस्थितियों के बावजूद मिशनरी कार्यों में लगे रहने वालों के लिए, हम परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं।

सारांश

यहां पर आप कह रहे होंगे, ''यह सब है तो बहुत रोचक, परन्तु इसका *मुझ से* क्या लेना-देना? मैं तो कोई मिशनरी नहीं हूं।'' यदि आप एक मसीही हैं, तो आपको एक मिशनरी होना *चाहिए*। ''मिशनरी'' शब्द एक लातीनी शब्द से निकला है जिसका अर्थ है ''जिसे भेजा गया है।'' हो सकता है कि आपको एक मण्डली द्वारा संसार के किसी और भाग में न भेजा गया हो, जैसा कि हम आम तौर पर मिशनरी के बारे में सोचते हैं, परन्तु उन लोगों तक सुसमाचार ले जाने के लिए जिनके साथ आप हर रोज़ मिलते हैं, आपको प्रभु की ओर से आदेश मिला है (मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15,16)! हास्य अभिनेता विल्सन से एक बार पूछा गया कि उसका सम्बन्ध किस धर्म से है। ''मैं यहोवा का दर्शक हूं,'' उसने कहा। ''वे मुझे यहोवा का गवाह बनाना चाहते थे, परन्तु मैं इसमें उलझना नहीं चाहता था।'' मुझे आशा है कि सुसमाचार का प्रचार करने के लिए हम में से कोई भी दर्शक बनने का इच्छुक नहीं है, सभी अपने दोस्तों, पड़ोसियों तथा परिवार के साथ सुसमाचार को बांटने की महान चुनौती में शामिल होने के इच्छुक हैं!

हर एक मसीही को मिशनरी होना चाहिए, इसलिए इस पाठ में आपके लिए *बहुत* कुछ है। आप प्रभु के मिशनरी होने, परमेश्वर का परिवार होने, मित्र होने, संगति होने, अपने जीवन में परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने की अच्छी भावना होने की आशिषों का आनन्द उठा सकते हैं। इन कष्टों में से कोई एक या सभी आप पर आ सकते हैं: निराशा और हताशा, अपमान और कपट, परित्याग और निराशा, ख़तरा और बीमारी आदि। और जब ये आप पर आ पड़ें, तो आनन्दित हों (जैसे प्रेरित हुए) कि आप उसके नाम के निमित्त दुख उठाने के योग्य तो ठहरे (5:41) उसमें भरोसा रखें!

विज़ुअल-एड नोट्स

इस पाठ में, पौलुस की मिशनरी यात्राएं आरम्भ होती हैं; अन्ततः महान आज्ञा अर्थात ग्रेट कमीशन को सच्चे मन से पूरा करने का काम आरम्भ होता है। अंग्रेज़ी में यहां शब्दों का एक दिलचस्प खेल है: ''N-E-W-S'' अक्षरों को बोर्ड पर या कपड़े पर यह बताने के

लिए लिखें कि सुसमाचार (''शुभ *समाचार*'' अर्थात good *news*) का (1) यरूशलेम में और (2) यहूदिया और सामरिया में (1:8) प्रचार कैसे हुआ था। अंग्रेज़ी के इन, अक्षरों को, इस प्रकार तरतीब दें:

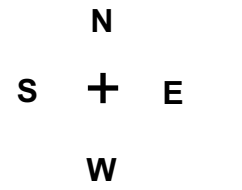

यह सरल उदाहरण ज़ोर देता है कि अब शुभ समाचार का प्रचार *सभी दिशाओं* (उत्तर, दक्षिण, पूर्व, और पश्चिम) में अर्थात (3) पृथ्वी के छोर तक किया जाना था (1:8)।

पाद टिप्पणियां

[1]यह मीटिंग बरनबास की मौसी मरियम के घर हुई। [2]शास्त्र के अनुवाद ''यरूशलेम से लौटे'' में पाठ सम्बन्धी कठिनाइयां आती हैं, परन्तु अधिकतर अनुवादक सहमत हैं कि शास्त्र का अर्थ यही होगा। [3]कइयों का मत है कि पौलुस को मन्दिर वाला दर्शन (22:17-21) यरूशलेम की ओर जाते हुए मिला। हमने इस दर्शन का अध्ययन पौलुस के मनपरिवर्तन के बाद यरूशलेम में उसकी पहली फेरी (9:26-30) के सम्बन्ध में किया। [4]पौलुस की बाद की दिलचस्पी कि यरूशलेम के लिए दूसरा चंदा ''पवित्र लोगों को भाए (गा)'' (रोमियों 15:31) मुझे यह विश्वास दिलाता है कि यहूदिया में कम से कम कुछ मसीहियों ने अनिच्छुकता से पहला चंदा लिया था। हमेशा दान देने वाले के लिए अचानक लेने वाला बनना कठिन हो जाता है। [5]12:12 पर नोट्स देखिए। [6]कुलुस्सियों 4:10। [7]मुद्रित प्रचारक विद्यालय के छात्र: ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 203 पर कालानुक्रम चार्ट देखें। [8]कई आयतें (उदाहरण के लिए प्रकाशितवाक्य 10:9-11) सुसमाचार के प्रचार की मिठास तथा कड़वाहट की बात करती हैं। [9]आत्मा की प्रेरणा से शिक्षा देना आत्मा का एक दान था (1 कुरिन्थियों 12:28, 29)। कइयों ने यह प्रमाणित करने का प्रयास किया है कि कौन से व्यक्ति को भविष्यवाणी का दान मिला था और किसको शिक्षा का दान मिला था। यह सम्भव है कि उन पांचों को दोनों दान मिले थे (शाऊल/पौलुस के पास तो स्पष्टतया थे ही)। [10]कइयों का मानना है कि शमौन सम्भवत: कुरेने से था, जैसे अगला व्यक्तिगत नाम है; अनुमान लगाया जाता है कि यह शमौन कुरेने का रहने वाला था (मत्ती 27:32)। हम नहीं जानते।

[11]यदि शमौन कुरेने से था, जो कि अफ्रीका का इलाका था, तो यह सम्भव है कि वह एक हब्शी था। परन्तु, शमौन एक इब्रानी नाम है, ''नीगर,'' अथवा ''काला,'' से शायद केवल यह तथ्य पता चलता है कि उसका रंग अधिकांश दूसरे यहूदियों से काला था। (''नीगर'' में ''ी'' की लम्बी आवाज़ है।) [12]लूकियुस एक साधारण यूनानी नाम था। नये नियम में इस नाम के कई और लोगों का उल्लेख है। [13]पृष्ठ 43 पर हेरोदेस अग्रिप्पा पर नोट्स देखिए। मनाहेम लूका की दोनों पुस्तकों के स्रोतों में से एक हो सकता है। प्रेरितों के काम पर भाग-2 में पृष्ठ 195 पर ''लूका द्वारा प्रयुक्त सम्भावित स्रोत'' पर अतिरिक्त लेख देखिए। [14]''वे'' उन पांचों को कहा हो सकता है जिनका नाम अभी-अभी आया, परन्तु आयत 3 के संदर्भ में, सम्भवत: यह समस्त कलीसिया है। [15]पृष्ठ 178 पर ''उपवास और मसीही'' पर अतिरिक्त लेख देखिए। [16]मिसियोलौजिस्टों ने पौलुस की ''मिशन कार्य प्रणाली'' पर अध्ययन करने के लिए कई वर्ष बिताए हैं। इन आरम्भिक मिशनरी

प्रयासों में परमेश्वर द्वारा चुने गए कुछ ढंगों का उल्लेख कभी-कभी हम करेंगे। [17]कलीसिया ने पहले यहूदिया में चंदा ले जाने के लिए बरनबास और पौलुस को चुना था, इसलिए बहुतों को आश्चर्य नहीं हुआ होगा, परन्तु कई अवश्य ही आश्चर्यचकित हुए होंगे क्योंकि शाऊल अभी भी आपेक्षिक नवागत था। [18]भाग-2 में पृष्ठ 185 पर ''पवित्र आत्मा क्या करता है?'' पर अतिरिक्त लेख देखिए। [19]प्राचीनों की नियुक्ति हेतु ऐसी ही एक प्रार्थना सभा के लिए, देखिए प्रेरितों 14:23। [20]लातीनी समानार्थक ''मिशनरी'' है।

[21]पृष्ठ 103 पर 14:23 पर नोट्स देखिए। यद्यपि मिशनरियों को नियुक्त करना उन आयतों का विषय नहीं है, किन्तु नियुक्ति के लिए एक गंभीर प्रार्थना सभा का सिद्धांत वही है। [22]हर व्यक्ति के जीवन के लिए परमेश्वर की *साधारण* इच्छा परमेश्वर के वचन में मिलती है। मैं एक मसीही के जीवन के लिए परमेश्वर की *विशेष* योजना की बात कर रहा हूं। [23]मिशनरी दल में यूहन्ना मरकुस की ''भूमिका'' पर टीकाकारों में बहस होती है। हिन्दी बाइबल में आयत 5 ''सहायक'' शब्द को ''उनका सेवक'' कहा गया है। संभवत: उसकी कोई विशेष ''भूमिका'' नहीं थी, परन्तु उसे इसलिए ले जाया गया था ताकि उसके करने के लिए जो भी काम हो, वह उसे करे। (हम यूहन्ना मरकुस को ''प्रशिक्षण-अधीन-मिशनरी'' का नाम दे सकते हैं। बरनबास तथा शाऊल दोनों ही जवान लोगों को परमेश्वर की सेवा के लिए तैयार करते रहते थे।) [24]लूका ने स्पष्ट दिखाया कि पहली मिशनरी यात्रा अन्ताकिया की ''मिशन कमेटी'' के निर्णय का नहीं, बल्कि परमेश्वर के निर्देश का परिणाम थी। [25]पृष्ठ 55 पर मानचित्र और पृष्ठ 14,15 पर अन्ताकिया और सिलुकिया पर नोट्स देखिए। [26]कुप्रुस और इस पाठ में उल्लेखित अन्य स्थानों की स्थिति के लिए, पृष्ठ 55 पर मानचित्र देखिए। [27]कुप्रुस 140 मील लम्बा तथा 60 मील चौड़ा है। [28]हम नहीं जानते कि पवित्र आत्मा ने मिशनरियों को मार्ग विवरण कहां तक दिया था। शायद वे अपनी पसंद की कुछ जगहों पर गए। यदि ऐसा है, तो यह सम्भव है कि यदि शाऊल मुखिया था, तो उसने आरम्भ करने के लिए कुप्रुस को न चुना हो, क्योंकि वहां सुसमाचार का प्रचार कम से कम यहूदियों में पहले ही हो चुका था (11:19; तु. रोमियों 15:20)। [29]अभी तक, अधिकांश मिशनरी कार्य मण्डली की ओर से किए गए कार्य के परिणामस्वरूप नहीं बल्कि निजी लोगों के प्रयासों के फलस्वरूप हुए थे। [30]हवाई के स्थान पर कुछ अन्य सुप्रसिद्ध पर्यटक स्थलों का नाम दिया जा सकता है।

[31]यूनानी शब्द का अनुवाद ''टोन्हा'' शमौन टोन्हे की कहानी के उसी मूल शब्द से है जिस से ''टोना करके'' (अर्थात जादू करके) है (8:9-11)। पुराने नियम में जादूगरी के विरुद्ध आज्ञा दी गई थी, परन्तु ''अचम्भे काम करने वाले'' यहूदी अभी भी थे (मत्ती 12:27; लूका 11:19; प्रेरितों 19:13)। [32]नबी के झूठा या सच्चा होने की परख के लिए मूसा ने एक मापदण्ड दिया (व्यवस्थाविवरण 13:1-7; 18:20-22)। [33]वर्षों तक नास्तिक लोग कहते थे कि कुप्रुस में रोमी राज्यपाल को ''सूबा'' कहकर लूका ने गलती की। परन्तु, सोली, कुप्रुस में ''पाडलुस की सूबाई में'' घटने वाली घटनाओं को बताते हुए एक शिलालेख मिलने से लूका की बात सिद्ध हो गई है। [34]लूका के कहने का भाव अवश्य यह होगा कि ''इलीमास'' का अर्थ ''जादूगर'' है। कई लोग ''इलीमास'' को अरबी मानते हैं; कइयों का विचार है कि यह कोई और भाषा है। इस नाम के बारे में हम केवल इतना ही कह सकते हैं कि इसका अर्थ ''जादूगर'' है, क्योंकि लूका ने कहा कि इसका अर्थ यही था। [35]यूनानी शब्दों में प्रयुक्त काल का अनुवाद ''विरोध कर रहा था'' संकेत देता है कि यह एक ही नहीं बल्कि जारी रहने वाला कार्य था। [36]''पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो'' ''पवित्र आत्मा के वश में'' होने को कहा गया है। इस संदर्भ में, इसका चमत्कारी अर्थ है। [37]अनुवादित शब्द के यूनानी शब्द ''चुतराई'' का अर्थ ''प्रलोभन देकर फंसाना'' है। [38]कई लेखक शाऊल का ''आत्मसंयम खोने'' के कारण उसकी आलोचना करते हैं। परन्तु, शाऊल, आत्मा की प्रेरणा से बात कर रहा था; यह कर वह *प्रभु का* प्रतिनिधित्व कर रहा था (आयत 11)। [39]''यीशु'' ''यहोशू'' का यूनानी रूप है। नये नियम के समयों में यहोशू तथा यीशु प्रचलित नाम थे। [40]यूनानी शब्द का अनुवाद ''धुंधलाई'' आंखों के एक विशेष रोग के लिए डॉक्टरों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द था। लूका की शब्दावली एक बार फिर उसकी चिकित्सकीय पृष्ठभूमि को प्रतिबिम्बित करती है।

[41]अध्याय 5 में हनन्याह और सफीरा की मृत्यु पतरस द्वारा किए आश्चर्यकर्म के कारण नहीं बल्कि

परमेश्वर की ओर से प्रत्यक्ष दण्ड के कारण हुई। [42]इस घटना और फिरौन के दरबार में मूसा द्वारा जादूगरों का सामना करने की घटना में समानता देखी जा सकती है (निर्गमन 7-9; 2 तीमुथियुस 3:8 भी देखिए)। [43]जहां तक हम जानते हैं, बार-यीशु ने मन नहीं फिराया; स्पष्टतया उसे प्रभु की ताड़ का लाभ नहीं मिला। [44]16:34 में वाक्यांश ''परमेश्वर पर विश्वास'' में दारोगे का पश्चात्ताप तथा बपतिस्मा शामिल था (आयत 33)। एक अन्य उदाहरण के लिए, प्रेरितों 18:1 की तुलना 1 कुरिन्थियों 1:14 में क्रिस्पुस के मनपरिवर्तन के संबंध से कीजिए। [45]नाम ''पौलुस'' का अर्थ है ''छोटा।'' शाऊल को नाम ''पौलुस'' सरगियुस पौलुस के दरबार में नहीं *दिया गया* था; क्रिस्पुस के पास जाने से बहुत पहले वह ''पौलुस करके जाना जाने लगा था।'' [46]पौलुस के आरम्भिक जीवन के हवालों में नाम ''शाऊल'' का इस्तेमाल अभी भी होता है। [47](1) लुस्त्रा की भीड़ द्वारा बरनबास को प्राथमिकता देना (14:12, 14) और (2) यरूशलेम में लौटने पर बरनबास को अधिक महत्व दिया जाना (15:12, 25) अपवाद हैं। [48]यहां हम बरनबास का एक और प्रसंशनीय गुण देखते हैं: जहां भी आवश्यकता हो वह अगुवे या अनुयायी के रूप में प्रभु की सेवा बिना किसी शिकायत के हर हाल में करने का इच्छुक था। [49]एक आरम्भिक मसीही लेखक जॉन क्रिसोस्टॉम का कहना है कि ''लड़के को अपनी मां चाहिए थी।'' एक और सुझाव दिया जाता है कि अन्यजातियों में सुसमाचार का प्रचार करने में वह पूरी तरह से आराम महसूस नहीं कर रहा था। [50]मैं जानता हूं कि मिशन क्षेत्र से जल्दी लौटने के कई न्यायसंगत कारण हैं। जो लोग अपने वश से बाहर किसी कारण से मिशन क्षेत्र से घर वापस आने में स्वयं को दोषी मानते हैं मैं उन पर बोझ नहीं बढ़ाना चाहता। इस भाग में, मैं विशेषकर उन ''यूहन्ना मरकुसों'' की बात कर रहा हूं जो अपने आप के बारे में ही सोचते हैं, काम के बारे में नहीं।

[51]पिसिदिया का अन्ताकिया और उस क्षेत्र के अन्य नगर जहां वे गए गलतिया के रोमी शासित क्षेत्र के दक्षिण में थे। [52]मैं जहाज़ पर उस क्षेत्र के दूर तक गया हूं जिसे उस समय एशिया माइनर (अब तुर्की) कहा जाता था। यह कठिनाइयों भरा देश है! [53]''डाकुओं के जोखिमों'' (2 कुरिन्थियों 11:26) की बात करते समय पौलुस के मन में यही यात्रा होगी। [54]''इज़ मिशन इम्पॉसिबल?'' में रिक ऐचले द्वारा यह वर्णन उद्धृत किया गया। [55]वर्षों से, गलतियों की पुस्तक पर यह बहस रही है कि क्या यह पुस्तक दक्षिणी गलतिया में प्रथम मिशनरी यात्रा के दौरान स्थापित कलीसियाओं के नाम लिखी गई थी या उत्तरी गलतिया में अज्ञात कलीसियाओं के नाम। बहुत से आधुनिक विद्वानों का मानना है कि यह दक्षिणी गलतिया में कलीसियाओं के नाम लिखी गई थी और मैं उन से सहमत हूं। [56]स्पष्टतया, पौलुस और बरनबास ने पिरगा में प्रचार लौटते समय किया (14:25)। [57]पंफूलिया को ''संसार में मलेरिया पकड़ने वाला सबसे बड़ा स्थान'' कहा गया है। कइयों का मानना है कि पौलुस के ''शरीर में एक कांटा'' (2 कुरिन्थियों 12:7, 8) बार-बार मलेरिया के आक्रमण को कहा गया। ऐसा था या नहीं, हम नहीं जानते।